प्रातःक्लास 2.3.68 ओमशांति पिताश्री मधुबन

ओमशांति। पतित–पावन शिव भगवानुवाच। बाप ने समझाया है कोई भी मनुष्य मात्र को फिर चाहे दैवी गुण वाला हो या आसुरी गुण वाला हो उनको भगवान हनी(नहीं) कह सकते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं दैवी गुण वाले होते हैं सतयुग में। आसुरी गुण वाले होते हैं कलियुग में। इसलिए बाबा ने लिखत भी बनाई थी कि दैवीगुण वाले हो या आसुरी गुण वाले हो?सतयुगी हो या कलियुगी हो?यह बातें बड़ी मुश्किल मनुष्यों को समझ में आती हैं। जैसे बंदर को समझाया जाये तो समझेंगे क्या? वैसे यह भी बंदर बुद्धि है। सूरत मनुष्य, सीरत बंदर की है। सतयुग में सूरत मनुष्य की, सीरत देवताओं की होती है। तुम सीढ़ी पर बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। तुम्हारे ज्ञान के बाण बहुत अच्छे हैं ;परंतु बाण के नोक में ज़हर होता है। वह लगने से ही मर जाते हैं। वैसे तुम्हारे तलवार में भी जौहर होता है। कोई बहुत तीखे जौहर वाले तलवार होते हैं। जैसे गुरू–गोविंद सिंह की तलवार विलायत चली गई थी। उनकी तलवार लेकर कितनी परिक्रमा करते हैं। कितना तलवार ....है। कोई तो दो पैसे की भी तलवार होती है, जिसमें जौहर बहुत होता है। वह बहुत तीखे होते हैं। इसकी निशानी दिखाई पड़ती है। जौहर वाले तलवार का बहुत मान होता है। बच्चों में भी ऐसे ही हैं। कोई में ज्ञान तो बहुत है ;परंतु योग का जौहर बिल्कुल थोड़ा है। इससे जो बांधेली हैं,गरीब हैं वह शिवबाबा को बहुत याद करती हैं। ज्ञान कम है। याद में तीखे हैं। याद का जौहर अच्छा है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं। जैसे एक अर्जुन औ(र) भील का मिसाल है। दिखाते हैं अर्जुन से भील तीखा हो गया बाण मारने में। अर्जुन अर्थात् जो घर में रहते हैं। रोज सुनते हैं। उनसे बाहर वाले तीखे हो जाते हैं। घर में साथ में रहने वालों में न तो ज्ञान है , न योग है। कुछ भी नहीं। जिनमें ज्ञान का जौहर है उनके आगे वह भरी ढोते हैं। कहेंगे भावी। कोई फेल होते हैं तो दिवाला मारते हैं तो नसीब पर हाथ रखते हैं ना। क्या पद पावेंगे? ज्ञान के साथ फिर योग का जौहर भी चाहिए। जौहर नहीं है तो गोया वह भी कुकरज्ञानी है। बच्चे भी फेल करते हैं। कोई का पति में, कोई का बच्चों में ,कोई का किसमें प्यार रहता है। ज्ञान में तो बड़े तीखे ;परंतु अंदर में खिट2 बहुत रहती है। यहां तो बिल्कुल साधारण रहना होता है। सब कुछ देखते हुए जैसे कि देखते नहीं। एक बाप से ही प्रीत है। तब गाया भी जाता है कम कार डे दिल यार डे। आखिर में काम करते भी बुद्धि में यह याद रहना है। आत्मा हूं। बाप ने फिर फरमान किया है मुझे याद करो। भक्तिमार्ग में भी काम–काज करते हुए ना कोई ईष्ट देवता को याद करते रहते हैं। वह तो है पत्थर का बुत। उनमें आत्मा तो है नहीं। ल0ना0 पूजे जाते हैं। पत्थर की मूर्तियां हैं ना। बोलो, उनकी आत्मा कहां?अभी तुम समझते हो वह जरूर कोई नाम–रूप में हैं। पतित हैं। अभी फिर योगबल से तुम पावन देवता बन रहे हो। एम ऑब्जेक्ट यह है। दूसरी बात बाप समझाते हैं ज्ञान का सागर और ज्ञान गंगायें पुरुषोत्तम युग पर ही होती हैं। सब एक ही समय पर होते हैं। भल सन्यासी तो बहुत हैं ;परंतु उनमें ज्ञान नहीं। ज्ञान का सागर आता है ही पुरुषोत्तम संगमयुग पर। कब उनके आगे ज्ञान होता नहीं। यह सन्यासी आदि पुराना शास्त्रों का ज्ञान सुनाते रहते हैं। बड़े2 ऋषि–मुनि आदि सब वेद–शास्त्र आदि पढ़ते रहते हैं। ज्ञान सागर तो आते ही हैं कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर। ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव। उनको शरीर चाहिए, जो बात कर सके। बाकी पानी की तो बात ही नहीं। यह तुमको ज्ञान मिलता ही है संगम पर। बाकी सबके पास है भक्ति। भक्तिमार्ग वाले गंगा के पानी को सब पूजते रहते हैं। पतित–पावन तो एक ही बाप है। वह आते ही हैं एक बार। जब पुरानी दुनियां पलटते हैं। अब यह किसको समझाने में भी बुद्धि चाहिए। एकान्त में विचार–सागर–मंथन करना पड़े। क्या लिखें? जो मनुष्य समझ जाये ज्ञान सागर पतित–पावन तो एक ही परमपिता परमात्मा ही है। वह जब आते हैं उनके बच्चे जो ब्रह्माकुमार–कुमारियां बनते हैं वही ज्ञान उठाय आकर ज्ञान गंगायें बनते हैं। उनके ज्ञान गंगायें हैं जो ज्ञान सुनाते रहते हैं। वही सदगति कर सकते हैं। पानी में स्नान करने से पावन नहीं बन

सकते। शिवबाबा फिर है प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियां। ब्रह्माकुमारी नहीं तो ज्ञान है नहीं। ज्ञान होता ही है संगम पर। यह समझने में भी बड़ी युक्ति चाहिए। बड़ा अंतर्मुख चाहिए। शरीर का भी भान छोड़ अपन को आत्मा समझना है। इस समय कहेंगे हम पुरुषार्थी हैं। याद करते2 भी जब पाप खतम हो जायेंगे फिर सम्पूर्ण लड़ाई शुरू हो जावेंगे। जब तक सबको पैगाम मिल जाये। पैगाम अथवा मैसेज तो शिवबाबा ही देते हैं। खुदा को पैगम्बर कहते हैं ना। तुम सभी को यह पैगाम अथवा मैसेज पहुंचाते हो कि अपन को आत्मा समझो। परमपिता परमात्मा शिव के साथ योग लगाओ तो विकर्म विनाश होंगे। बाप प्रतिज्ञा करते हैं तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के पाप भस्म हो जावेंगे। यह तो बाप मुख से बैठ समझाते हैं। पानी की गंगा क्या समझावेगी? बेहद का बाप बेहद के बच्चों को समझाते हैं तुम कितने बड़े बेसमझ ,नालायक ,कंगाल बन गए हो। तुम सतयुग में कितना सुख,सम्पत्तिवान थे। यह है बेहद की बात। यह देवी–देवताएं भी इस समय तमोप्रधान हैं। बाकी यह जो चित्र आदि सब तो भक्तिमार्ग के है। यह भक्तिमार्ग के सामग्री भी बननी ही है। मनुष्यों को दुर्गति का पाना ही है। शास्त्र पढ़ना ,पूजा कराना यह भी भक्ति है ना। मैं थोड़े ही शास्त्र आदि पढ़ता हूँ। मैं तो तुम पतितों को पावन बनाने ज्ञान सुनाता हूँ कि अपन को आत्मा समझो। अभी आत्मा और शरीर दोनों ही तमोप्रधान ,पतित हैं। अभी बाप को याद करो तो तुम यह देवता बन जावेंगे। देह के सभी पुराने सम्बंधों से ममत्व मिट जाये। गाते भी हैं बाप आप जब आयेंगे तो हम और कोई की नहीं सुनेंगे। एक आप से ही सम्बंध जोड़ेंगे और सब देहधारियों को भूल जायेंगे। तो बाप वह इन्जाम तुमको याद कराते हैं। बाप कहते हैं मेरे साथ योग लगाने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम नई दुनियां के मालिक बन जावेंगे। यह है मुख्य एमऑब्जेक्ट। राजाओं के साथ प्रजा भी तो जरूर बननी है। राजाओं को दास–दासियाँ भी तो चाहिए ना। बाप सब बातें समझाते रहते हैं। अच्छी तरह योग में न रहेंगे, दैवी गुण न धारण करेंगे तो ऊँच पद कैसे पावेंगे? घर में भी कोई न कोई बात पर झगड़ा ,कलह होते हैं ना। बाप लक्ष्य देते हैं तुम्हारे घर में कलह है। इसलिए ज्ञान ठहरता नहीं। बाबा पूछते हैं स्त्री–पुरुष दोनों ठीक चलते हैं? चलन बड़ी अच्छी चाहिए। क्रोध का अंश न रहे। अभी तो दुनियां में कितना हंगामा ,अशांति है। क्या यह सदैव चलती रहेगी? आगे चलकर शांत हो जावेंगे। तुम्हारे में बहुत ज्ञान और योग के तीखे हो जावेंगे तो और भी बहुत ही याद करने लग पड़ेंगे। तुम्हारी प्रैक्टिस भी अच्छी हो जावेगी। विशाल बुद्धि हो जावेंगे। ज्ञान गंगा का चित्र कोई ठीक रीति बनाकर भेजा नहीं है। बाबा के पास तो एक बोर्ड जो बनाकर (भेजा) वह बाप ने रिजेक्ट कर दिया है। ऐसे बहुत चित्र रिजेक्ट करते हैं ;क्योंकि कोई अर्थ नहीं निकलता। बाबा तो छोटे2 चित्र भी रिजेक्ट करते हैं। सभी बड़े2 चित्र हों। बाबा तो कहते हैं बहुत बड़ा चित्र बनाओ, जो बाहर में मुख्य स्थानों पर रखो। जैसे नाटक के चित्र भी रखते हैं ना। ऐसी अच्छी चित्र बनाये जो बिल्कुल खराब न हो। गंगा का चित्र बहुत अच्छा हो। नीचे में लिख दो भगवानुवाचः मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। तुम देवता थे सो असुर बने हो। सीढ़ी भी बहुत बड़े2 बनाय ऐसे जगह रखो जो सबकी नज़र चढ़े। शीट पर ही ऐसा रंग हो ,मतलब तो पक्का हो पानी वा धूप आदि में बिल्कुल खराब न हो। मुख्या स्थानों पर रख दो या कहां एग्जीविशन होता हो तो मुख्य दो/तीन चित्र ही काफी है। बाबा झुंझार अक्षर पसंद नहीं करते हैं। यह गोला भी वास्तव में इस दीवाल जितना बनना चाहिए। भल 5/10 आदमी उठाकर कहां रखे। कोई भी दूर से देखेंगे तो एकदम क्लीयर पता पड़ जावेगा। सतयुग में तो और सब धर्म ,इतने मनुष्य होते ही नहीं। वह तो आते ही बाद में हैं। पहले2 स्वर्ग में तो बहुत थोड़े आदमी होते हैं। अभी स्वर्ग है या नर्क? तुम इस पर बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। जो आवे उनको समझाते रहो। बड़ा चित्र हो। जैसे बड़े2 बुत बनाते हैं। पाण्डवों की कितनी बड़ी बुत बनाई है। तुम पाण्डव हो ना। पाण्डव

किसको कहते हैं यह भी मनुष्यों को पता नहीं है। तो चित्र बहुत बड़े2 अच्छे बनाने चाहिए। श्रीकृष्ण के भी चित्र में लिखना है जबकि गीता झूठी है तो उनके सब पत्ते झूठे हो जाते। कोई क्या करेंगे? यह तो बंदर सम्प्रदाय है ना। बंदर से कब डरा नहीं जाता है। मनुष्य भी आकर अपनी बक2 करेंगे। उनको समझाया जावेगा। कृष्ण तो पुनर्जन्म लेते हैं। उनकी आयु तो 150वर्ष थी। शिवबाबा 150वर्ष रहते हैं क्या? शिवबाबा तो संगमयुग पर ही 50/60वर्ष पढ़ाते है। वह (श्रीकृष्ण) तो है ही सतयुग का फर्स्ट प्रिंस। तुम समझाते2 अपनी राजाई स्थापन कर लेत हो। कोई पढ़ते2 अपनी पढ़ाई छोड़ भी देते हैं। स्कूल में भी कोई नहीं पढ़ सकते हैं तो पढ़ाई छोड़ देते हैं ना। यहां भी बहुत हैं पढ़ाई को छोड़ दिया है। फिर वह स्वर्ग मे नहीं आवेंगे क्या? मैं विश्व का मालिक , मेरे मुख से दो अक्षर भी सुना तो वह भी स्वर्ग में जरूर आवेंगे। आगे चलकर ढेर सुनेंगे। यह सारी राजधानी स्थापन होती है कल्प पहले मिसल। बच्चे समझते है। अनेक बार राज्य लिया है, फिर गंवाया है। हीरे जैसा फिर कौड़ी जैसा बने हैं। भारत हीरे मिसल था। अभी क्या हुआ है? फिर भारत वही होगा ना। इस संगम को पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। उत्त्म ते उत्तम पुरुष यह है। बाकी सभी हैं कनिष्ट। जो पूज्य थे वही पुजारी बनते हैं। 84जन्म लेते हैं। वह शरीर भी खतम हो गए। आत्मा भी तमोप्रधान बन गई। जब सतोप्रधान है तो पूजते ही नहीं। चैतन्य में हैं। अभी तुम शिवबाबा चैतन्य को याद करते हो। फिर पुजारी बनेंगे तो पत्थर को पूजेंगे। अभी बाप तो चैतन्य है ना। फिर उनको ही पत्थर की मूर्ति बनाकर पूजा करते हो। रावण राज्य में भक्ति शुरू होती है। आत्माएं वही हैं। भिन्न2 शरीर धारण करती आती हैं। नीचे गिरने से ही भक्ति शुरू करते हैं। अभी बाप आकर ज्ञान देते हैं तो दिन शुरू होता है। ब्रह्मा सो देवता बन जाते हैं। अभी तो देवता नहीं कहेंगे। ब्रह्मा तो सतयुग में होता नहीं। तब सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा कौन है? यहां तो तपस्या कर रहे हैं। मनुष्य हैं ना। शिवबाबा को शिवबाबा ही कहा जाता हपै। इनमें हैं तभी भी शिवबाबा ही कहेंगे। दूसरा कोई नाम नहीं रखा जाता। इनमें शिवबाबा आते हैं। वह ज्ञान का सागर है। इस ब्रह्मा तन द्वारा ज्ञान देते हैं। तो चित्र आदि भी बड़ी समझ से बनानी चाहिए। इसमें तो लिखत ही काम आती है। पतित–पावन पानी का सागर पानी की नदियां हैं वा ज्ञान सागर उनसे निकली हुई ज्ञान गंगायें ब्रह्माकुमार–कुमारियां हैं? इनको ही बाप ज्ञान देते हैं ब्रह्मा द्वारा। जो ब्राह्मण बनते हैं वही फिर देवता बनते हैं। विराट रूप का चित्र भी बहुत बड़ा दिखाना चाहिए। यह है मुख्य चित्र। यहां तो वह चित्र है नहीं। दो/चार रोज में चित्र बन सकता है। यहां बच्चे आकर बाबा से चित्र आदि मांगते हैं तो बाबा देते हैं। बाबा से माँगे और बाबा ना करे यह तो हो नहीं सकता। कहेंगे ले जाओ। यहाँ तो हम खुद ही ज्ञान सुनाने वाले बैठे हैं। बाबा के पास कोई राइट हैंड है नहीं। ढूँढता रहता हूँ। विचार करता हूँ फलाने को मंगाऊँ। तो रिपोर्ट आती है इनकी क्रिमिनल आइ है ,चल न सकेंगे। आत्मा की चक्षु है सिविल बुद्धि। शरीर के चक्षु हैं क्रिमिनल बुद्धि। तुम्हारी आत्मा अभी त्रिकालदर्शी बनती है। यह भी कोई विरला ही समझते हैं। बहुत बुद्धू हैं। बाप को फारकती दे देते हैं तो जाकर चाण्डाल बनेंगे। चाण्डाल और क्या करेंगे? वह तो सिर्फ मुर्दे को तिल्ली देने ही जानते हैं। उनको यही बुद्धि में है चिक्षा को आग कैसे लगावें? बाकी तो अनपढ़े ही होते हैं। तो बच्चे समझते हैं राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें तो सब चाहिए। पिछाड़ी में तुमको सब सा0 होंगे। फर्स्टक्लास दास–दासियां भी बनेंगी। फर्स्ट दासी कृष्ण का पालन करेगी। सफाई करने वाले ,कपड़ा धुलाई करने वाली, बर्तन साफ करने वाली, खाना पकाने वाली ,सब होंगे ना। यहाँ से ही निकलेंगे ना। फर्स्ट नम्बर वाले जरूर अच्छा पद पावेंगे। वह भासना आता है। बाबा को बच्चों से भासना आती है ना। यह बहुत अच्छी मुरली चलाते हैं ; परंतु योग कम है। कोई स्त्री–पुरुष से एक ज्ञान में है तो कहते हैं बाबा दूसरा पति ठीक नहीं है। झगड़ा चलता है। इसको भी ठीक करना पड़े। नहीं तो खिट2 होगी। गाड़ी ठीक न चलेगी। एक/दो को सावधान करना है। प्रवृत्ति मार्ग है ना। जोड़ी एक जैसी चाहिए।

या तो उनको आप समान बनाना है या फिर मूंह(मोह) छोड़ देना है। स्त्री–स्त्री नहीं है। फिर तो भाई2 भी नहीं। यह दुनियां ही नहीं रहनी है। पिछाड़ी तुम दुनियां को ही भूल जावेंगे। समझते तो हो ना हम हँस हैं, यह बगुला है। किसमें कोई अवगुण ,किसमें कोई। चटा–बेटी चलती रहती है। मेहनत है बहुत। सहज भी है। सेकेंड में जीवनमुक्ति। बिगर कौड़ी खर्चा। बिगर खर्चा ऊँच पद पा सकते हो। गरीब जो हैं वह अच्छी सर्विस करते रहते हैं। यह तो पता है ना कौन2 हाथ खाली आये। बहुत ले आने (वाले) आज हैं नहीं। गरीब बैठे हैं और बहुत ऊँच मर्तबा पा रहे हैं। बाप तो समझाते हैं यह सारी दुनियां ही भस्म हो जाने वाली है। अर्थक्वेक में कितने खतम हो जाते हैं। मकान, पैसे आदि सब खतम हो जाते हैं। हीरोशिमा में सब मर गए। आत्माओं ने जाकर दूसरा जन्म लिया। उस समय दुःख फील करने की भी फुरसत नहीं मिलती है। अचानक मरते रहेंगे। पीनी भी नहीं पहन सकेंगे। रोने का टाइम ही नहीं मिलेगा। हास्पिटलें ही नहीं रहेंगी। बम्स ऐसे जहरीले बनाते हैं जो गिरे और खलास। कुछ भी करने की फुर्सत नहीं मिलती है। हार्टफेल होती है तो बैठे खतम हो जाते हैं। मौत ऐसा होने वाला है। बाबा ने विनाश के लिए युक्ति बहुत अच्छी रची है। दिन–प्रतिदिन तुम जैसे रिफाइन होते जाते हो। वैसे वह भी मौत का सामान भी रिफाइन करते जाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में अभी हमको यह छी2 शरीर को छोड़ कर जाने का है बाबा के पास। शिवबाबा ही याद होगा। औरों को तो कोई न कोई मित्र–सम्बंधी आदि याद आवेंगे। अंत घड़ी कहते हैं राम भगवान को याद करो। तुमको कहने की दरकार नहीं पड़ेगी। तुम जानते हो बाप को याद करते2 यह पुराना शरीर खुशी से छोड़ देंगे। बुद्धि सब तरफ से हटाने में टाइम लग जाता है। इसमें ही मेहनत है। बाकी 84के चक्र का ज्ञान तो बहुत सहज है। चक्र पूरा हुआ बाकी हम थोड़े रोज हैं। अभी बाप को ही याद करना है। अपनी नब्ज देखनी है कहां रग तो नहीं जाती है। यह तो हम जो कुछ देखते हैं खलास हो जाने का है। हम प्यार उनको करते हैं जो शिवबाबा की सर्विस में हैं। और कोई से भी प्यार है नहीं। बहुतों का बुद्धियोग मित्र–सम्बंधियों आदि से है। ज्ञान को जानते ही नहीं। ब्राह्मण ही नहीं। कोई से काम है तो उनसे मतलब निकलता है तो युक्ति से रास्ता रखना होता है। मित्र–सम्बंधियों को भी कुछ न कुछ सुनाते तो हैं ना। आगे चलकर बहुत आने वाले हैं। बहुत आवेंगे। फिर तो उन्हों को भी कशिश होगी। तुम्हारे पास आकर जब सुनते हैं तो कहते हैं ज्ञान तो बहुत अच्छा है। यह भी ड्रामा में नूंध है। विघ्न पड़ेंगे , गाली खावेंगे। जो कुछ होता है नथिंग न्यू। ड्रामा में नूंध है। हमको ऐसी बाप(त) न करनी चाहिए जिससे उपान्दी(उपाधी) हो। बिल्कुल मीठा ,शांतचित रहना है। ताली न बजनी चाहिए। कब देखो इनमें क्रोध का भूत है तो भाग जाओ। किनारा कर देना चाहिए। बहुत मीठा बनना है। बाबा पुरुषार्थ करा रहे हैं। शिवबाबा को तो पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। यह देहधारी पुरुषार्थी है। उनको तो देह है नहीं। उसने लोन लिया है तो जरूर किराया तो मिलेगा ना। कितनी गाली खाता हूँ। बाबा के कारण गालियाँ खाई तो इसका हिसाब–किताब तो मिलेगा ना। इसको कहा जाता है " बाट बेन्दे वाभण ..... " । यह पता थोड़े ही था बाबा प्रवेश करेंगे। तुम इस मृत्युलोक के निवासी बाकी 8वर्ष हो। बहुत गई..... याद की यात्रा की बहुत जरूरत है। यहां कोई भी चीज में ममत्व नहीं रखना है ; क्योंकि यह तो सब कब्रदाखिल होनी है। युक्ति से ,प्यार से अपना मतलब निकालना चाहिए। कल्याण भी करना है। पैसा भी अच्छा काम में लगाना है। कुमारी है तो बोलो हम तो अपने आबादी करने सेंटर खोलें। बहुतों का कल्याण करें। वह शादी तो बरबादी होती है। औलाद के लिए शादी की जाती है ;परंतु वार्स(वारिस) तो कोई अभी बनना ही नहीं है तो औलाद क्या करेंगे? बेहद के बाप को तो ब्राह्मण ही जानते हैं। बाप को ब्राह्मण भी बच्चे ही प्यारे लगते हैं। कुछ भी शारीरिक होगा तो कहेंगे अभी तो बच्चों को बहुत सर्विस करनी है। यह शरीर जितना रहे तो सबकी सर्विस करता रहूँ। सेवा तो बहुत करनी है ना। अच्छा ,मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार ,गुडमार्निंग।